**अथवा**

तेहिं जामायरेहिं पायत्तिगं वाइअं पि खज्जरसलुद्धत्तणेण तओ गंतुं नेच्छंति। ससुरो वि चिंतेइ–

'कहं एए नीसारिअव्वा ? साउभोयणरया एए खरसमाणा माणहीणा संति, तेण जुत्तीए निक्कासणिज्जा।' पुरोहिओ नियं भज्जं पुच्छइ–एएसिं जामाऊणं भोयणाय किं देसि ? सा कहेइ–

'अइप्पियजामायराणं तिकालं दहि-घय-गुडमीसिअमन्नं पक्कन्नं च सएव देमि।' पुरोहिओ भज्जं कहेइ–अज्जयणाओ आरब्भ तुमए जामायराणं वज्जकुडो थूलो रोट्टगो घयजुत्तो दायव्वो।

7. लज्जावग्ग के आधार पर शृंगार एवं लोकमंगल की समन्वय की विवेचना कीजिए।

8. क्रोध मनुष्य के लिए हानिकारक होता है, क्यों ? भगवती आराधना ग्रन्थ के आधार पर वर्णन कीजिए।

9. ससुरगेहवासीणं चउजामायराणं ग्रन्थ के आधार पर ससुर-दामाद सम्बन्धों का विवेचन कीजिए।



# CPL–02

## December – Examination 2021

## Certificate in Prakrit Language Examination

## प्राकृत भाषा में प्रमाण-पत्र

## Paper : CPL-02

## प्राकृत गद्य एवं पद्य

*Time : 1½ Hours* ] [ *Maximum Marks : **100***

**निर्देश :-** यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

**खण्ड–अ** **5×4=20**

**(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)**

**निर्देश :-** निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार, अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंकों का है।

1. (i) समणसुत्तं के चतुर्थ खण्ड का क्या नाम है ?

   (ii) मनुष्य के लिए **चार** परम दुर्लभ अंग कौनसे हैं ?

(iii) लज्जावग्ग का क्या अर्थ है ?

(iv) अभिमान रहित मनुष्य कैसा होता है ?

(v) पाइएविण्णाणकहा के रचनाकार का नाम लिखिए।

(vi) रोहिणीणाए कथा कहाँ से संकलित है ?

(vii) बड़ों की आज्ञा न मानने का क्या दुष्परिणाम होता है ?

(viii) चारित्रपाहुड में कुल कितनी गाथाएँ हैं ?

(ix) निर्वाण को कौन प्राप्त करता है ?

(x) सूत्रपाहुड क्या है ?

**खण्ड—ब** **4×20=80**

**(लघु उत्तरीय प्रश्न)**

**निर्देश :-** निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

2. समणसुत्तं में प्रतिपादित जीवन मूल्यों की विवेचना कीजिए।

3. मानव जीवन का क्या सार है ? आचारांग सूत्र के आधार पर स्पष्ट कीजिए।



4. अधोलिखित गाथाओं में से किसी **एक** गाथा की सप्रसंग एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी सहित व्याख्या कीजिए—

जागरह नरा! णिच्चं, जागरमाण्स्य वड्ढते बुद्धी।

जो सुवति ण सो धन्नो, जो जग्गति सो सया धन्नो॥

**अथवा**

न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरत्थं न मम्मयं।

अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्संतरेण वा॥

5. उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर जीवन की क्षणभंगुरता का वर्णन कीजिए।

6. अधोलिखित कथाओं में से किसी **एक** कथा की सप्रसंग एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी सहित व्याख्या कीजिए—

एवं जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सातं अणभिक्कंतं च खलु वयं सपेहाए खणं जाणाहि पंडिते!

जाव सोतपण्णाणा अपरिहीणा जाव णेत्तपण्णाणा अपरिहीणा जाव घाणपण्णाणा अपरिहीणा जाव जीहपण्णाणा अपरिहीणा जाव फासपण्णाणा अपरिहीणा, इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं पण्णाणेहिं अपरिहीणेहिं आयट्ठं सम्मं समणुवासेज्जासि त्ति बेमि।